नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नशे का जाल तोड़े बिना समाज सुरक्षित नहीं !

इंदौर में लगातार सामने आ रही नशीले पदार्थों की बरामदगी की घटनाएं अब केवल पुलिस खबर नहीं रह गई हैं, बल्कि पूरे समाज के लिए चिंता का विषय बन चुकी हैं. द्वारकापुरी इलाके में 48 लाख रुपये नकद और ब्राउन शुगर की बरामदगी हो या फिर हाल के दिनों में करोड़ों की एमडी ड्रग्स जब्ती—ये घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि शहर नशे के जाल में तेजी से फंसता जा रहा है. पुलिस भले ही हर बड़ी खेप को पकड़ने में सफलता हासिल कर रही हो, लेकिन यह भी उतना ही बड़ा सच है कि तस्करी का यह नेटवर्क लगातार फैलता जा रहा है. केवल इंदौर ही नहीं मध्य प्रदेश के अनेक शहर इस बीमारी से ग्रसित हो रहे हैं. आखिर यह नशे का कारोबार इतनी आसानी से हमारे बीच तक पहुंच कैसे रहा है? नशीले पदार्थों का खतरा केवल उन युवाओं तक सीमित नहीं है जो इसकी लत में पड़ते हैं. इसका असर पूरे परिवार, समाज और कानून-व्यवस्था पर पड़ता है. नशे की गिरफ्त में आया युवा अपने जीवन का स्वर्णिम समय खो देता है. उसकी शिक्षा, करियर और भविष्य सब कुछ अंधकार में डूब जाता है. यही नहीं, लत पूरी न हो पाने पर वह चोरी, लूटपाट, मारपीट जैसे अपराधों की ओर बढ़ता है. ऐसे में समाज में असुरक्षा की भावना गहराती है और अपराध दर बढ़ती है.

दरअसल, आज की सबसे बड़ी चिंता यह है कि नशे का कारोबार केवल गली-मोहल्लों तक सीमित नहीं रहा. यह अब संगठित अपराध का रूप ले चुका है. करोड़ों रुपये के मुनाफे वाला यह धंधा माफियाओं, दलालों और स्थानीय नेटवर्क के सहारे पनप रहा है. बिना संरक्षण और प्रभावशाली लोगों की शह के यह कारोबार लंबे समय तक चल ही नहीं सकता. इसका सीधा अर्थ है कि तस्करी के इस जाल को काटने के लिए केवल छोटे-मोटे तस्करों को पकड़ना पर्याप्त नहीं है. असली कार्रवाई उन लोगों पर होनी चाहिए जो इस कारोबार के पीछे की ताकत हैं. सरकार और प्रशासन के लिए अब यह वक्त निर्णायक कार्रवाई का है. जीरो टॉलरेंस की नीति केवल घोषणा तक सीमित नहीं रहनी चाहिए. पुलिस को तस्करों के नेटवर्क की आर्थिक कमर तोड़नी होगी. उनकी संपत्तियां जब्त कर उन्हें यह संदेश देना होगा कि नशे का कारोबार करने वालों के लिए मध्य प्रदेश की धरती सुरक्षित नहीं है. इसके साथ ही सीमावर्ती जिलों और शहरों की निगरानी बढ़ाई जानी चाहिए, क्योंकि नशे की खेप अक्सर बाहर से आती है. हालांकि केवल कानून से यह लड़ाई नहीं जीती जा सकती. समाज की भागीदारी इसमें उतनी ही आवश्यक है. परिवारों को अपने बच्चों पर नजर रखनी होगी, स्कूल-कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलाना होगा और युवाओं को खेल व सकारात्मक गतिविधियों की ओर आकर्षित करना होगा. साथ ही, जो युवा नशे की गिरफ्त में आ चुके हैं, उनके लिए पुनर्वास केंद्रों की संख्या और गुणवत्ता दोनों बढ़ाने होंगे. उन्हें अपराधी मानने के बजाय पीड़ित मानकर समाज की मुख्य धारा में वापस लाना होगा.

इंदौर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी है. यहां से पूरे प्रदेश की छवि बनती है. अगर यही शहर नशे की गिरफ्त में आता है तो यह पूरे मध्य प्रदेश के लिए कलंक होगा. इसलिए आज जरूरत है सख्त फैसलों की, कठोर कार्रवाई की और सतत जागरूकता की. नशे का जहर केवल एक पीढ़ी को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के भविष्य को निगल सकता है. याद रखना होगा कि सुरक्षित और समृद्ध समाज की राह नशे की जकड़न तोड़े बिना संभव नहीं .सरकार, पुलिस और समाज तीनों को मिलकर यह लड़ाई लड़नी होगी. यह केवल अपराध के खिलाफ जंग नहीं, बल्कि हमारे बच्चों और भविष्य को बचाने की लड़ाई है.

पर्यूषण पर्व पर नया चैलेंज

संदीप खमेसरा

> आठ दस दिन का यह बोधपूर्ण जीवन शायद जीवन को ही एक बड़ी छलांग लगवा दे! दृष्टि ही बदल जाए, और फलस्वरूप स्वयं की सृष्टि भी! दो घंटे का सत्संग, फिर कार्यालय या घर में वही क्लेश, इस पर्व के अंतिम दिन फिर वही क्षमापना. गौर कीजियेगा, क्षमा भी उससे ही मांगते हैं, जो नाराज़ ही नहीं है. जो नाराज़ है, या जिससे बातचीत ही बंद है, उससे न तो मांगते हैं, और वह मांगे तो भी उसे करते नहीं! आध्यात्मिक दृष्टि के इतने बड़े पर्व को इस तरह मनाया जाना, बेईमानी है. स्वयं के प्रति बेईमानी!! पर्यूषण पर्व की खूब शुभकामनाएं...! लेकिन वास्तविक रूप से समाशोधन करने वाला हो...

आज से पर्यूषण का पावन पर्व प्रारंभ हो गया है. आत्म निरीक्षण, व्यक्तित्व संशोधन, वृत्तियां के परिशोधन और होश पूर्ण जागरण का पर्व है यह!

पहले तो इस बात का अवलोकन करें कि इस जीवन में कितने पर्यूषण पर्वों के साक्षी हम बन चुके हैं. इन दिनों में साधु साध्वियों के सत्संग के साथ सामयिक, व्रत, उपवास क्षमायाचना आदि साधना के तमाम नियमों का पालन करते करते हमने अपना जीवन बिताया है. गौर इस बात पर करना है कि व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से हम पहले से नीचे गिरे हैं, जैसे थे वैसे ही हैं, या कुछ बेहतर हुए हैं! साधना की कोई भी पृष्ठभूमि, कोई भी त्यौहार या प्रयास, हमारा "Better Version" बना पा रहा है या नहीं, इतना भर देखने की आंख विकसित होनी चाहिए!

इस बार का पर्यूषण पर्व कुछ अलग तरह से मनाने के सुझाव हैं. अधिकांश लोगों के लिए पुरातन व्यवस्था को तिलांजलि देना असंभव होगा. लेकिन, स्वयं के रूपांतरण में, जो लोग धर्म को प्रयोग की पाठशाला के रूप में अंगीकार करने की हिम्मत उठा सकते हैं, यह खास उनके लिए है.

- इन दिनों पहली प्राथमिकता यह रहे कि स्वयं की क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं पर होश पूर्ण जागृति रहे.
- हम अपने निवास, कार्यालय, बाजार अथवा सड़क पर, जाने अनजाने सदस्यों के साथ किस तरह बर्ताव कर रहे हैं, उसपर नज़र रहे. कोशिश करें कि जैसे हम हर दिन क्रियाएं करते हैं और प्रतिक्रियाएं देते हैं उसमें कुछ परिवर्तन कर सकें. गुस्सा, चिड़चिड़ापन, तुनकमिज़ाजी, अपने हिसाब से सबको हांकने की प्रवृत्ति का इन दिनों कुछ त्याग कर पाएं तो इससे बड़ी साधना कोई ओर हो नहीं सकती.
- इन दिनों, अधिकांश समय मौन पूर्ण केवल देखते रहने का प्रयास करें. कुछ गलत भी हो रहा है तो उसे सही करने की कोशिश किए बिना, उसी रूप में स्वीकार करने की कोशिश कीजिए.
- अपने आसपास जो हो रहा है, उसपर कम से कम दृष्टि डालिए. अपना ध्यान केवल स्वयं के विचारों, संवेगों और सासों पर अत्यधिक रहे इसका प्रयास कीजिए.
- खाने में जो बना है, जो मिला है उसे सहर्ष प्रसाद समझ कर खा लीजिए. नमक कम, मसाला कम, स्वाद नहीं जैसी शिकायत तो कदापि नहीं. खाने की अपनी चॉइस को बिल्कुल शून्य कर दीजिए. यदि किसी दिन न मिले तो भी कोई बात नहीं, उस स्थिति तक...लेकिन बिना माथे पर शिकन के!
- काम के जितने झंझाल दिमाग में पाल रखें हैं, उनसे कुछ अवकाश लीजिए. कल या सात दिन बाद क्या करना है यह विषय ही इन दिनों छोड़ दीजिए.
- अपने मैं-पन को शून्य करने का प्रयास कीजिए. ऐसा बर्ताव कीजिए, जैसे आप हैं ही नहीं. चाहे कुछ समय के लिए ही सही, स्वयं की उपस्थिति को शून्य करने का प्रयास कीजिए. इसके लिए किसी बंद कमरे में बिना मोबाइल, बिना किताब, बिना किसी काम के केवल कुछ देर अकेले ऐसे ही बैठे रहिए.
- एकांत और मौन में रहने का अत्यधिक प्रयोग कीजिए. मौन केवल मुंह से नहीं, विचार से भी! इन दिनों, सारे संबंधों का कुछ कुछ घंटे विच्छेद करने का प्रयास कीजिए.
- अनुभव कीजिए कि आप अकेले हो गए हैं. नितांत अकेले! कोई काम नहीं, कोई बात करने वाला नहीं, कोई टीवी नहीं, कोई फोन नहीं, पढ़ने को कोई अखबार और किताब भी नहीं. इस स्थिति में आप कितना समय व्यतीत कर सकते हैं, यह बहुत महत्वपूर्ण है.
- इन दिनों, चाहतों को सीमित कर दीजिए. एक भिखारी सा जीवन जीने का प्रयास. कुछ मिले तो ठीक, ना मिले तो भी कोई शिकायत नहीं.
- मन ही मन कृतज्ञता से भरे रहिए. आभार मानिए. धन्यवाद दीजिए. जीवन में जो गलत हो गया उसका शोक नहीं, लेकिन जान बुझ कर किसी का बुरा किया, उसका पश्चाताप कीजिए. बोल कर जिससे क्षमा नहीं मांग सकते, मन ही मन उसके प्रति क्षमप्रार्थी हो जाइए.

विंध्य की डायरी

उप मुख्यमंत्री के भागीरथ प्रयास का प्रतिफल 'फ्लाई ओवर'

डा. रवि तिवारी

कहते है आवश्यकता ही अविष्कार की जननी होती है और मन में दृढ़ संकल्प, साहस के साथ भागीरथ प्रयास किया जाय तो सफलता निश्चित रूप से मिलती है, फिर चाहे कोई भी कार्य क्यो न हो. शहर में बढ़ती जनसंख्या और भविष्य में यातायात की भीड़ को कम करने के लिये फ्लाई ओवर की परिकल्पना की गई और इसे धरातल पर उतारने के लिये उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला के भागीरथ प्रयास से रीवा शहर को फ्लाई ओवर की सौगात मिली है. यह उप मुख्यमंत्री की दूरदर्शिता का परिणाम 'फ्लाई ओवर' है. यातायात व्यवस्था के सुधार में यह मील का पत्थर साबित होगा.

कमिश्नर बंगले से लेकर ढ़ेकहा तिराहे के आगे तक फ्लाई ओवर की सौगात यूं ही नही मिली. इसके लिये उप मुख्यमंत्री रीवा से लेकर दिल्ली तक लगातार प्रयास करते रहे. एक बार सर्वे हुआ और फाइल बीच में रूक गई. कुछ दिन पहले उपमुख्यमंत्री शुक्ल ने दिल्ली में केन्द्रीय सडक़ परिवहन मंत्री नितिन गडक़री से मुलाकात कर फ्लाई ओवर की मांग रखी और शनिवार को विंध्य के लिये यह ऐतिहासिक क्षण था जब जबलपुर में लोकार्पण समारोह के दौरान केन्द्रीय सडक़ परिवहन मंत्री ने विंध्य के सबसे बड़े फ्लाई ओवर की घोषणा की. 150 करोड़ की लागत से यह बनकर तैयार होगा. विकास की सौगातो की माला में एक और फ्लाई ओवर का फूल पिरोया गया है. उप मुख्यमंत्री का शौक 'विकास' है.

आने वाले भविष्य की संभावनाओ को भापते हुए उन्होने फ्लाई ओवर का संकल्प लिया. रिमही जनता को भी भरोसा था कि यह सौगात मिलेगी. तो वही उप मुख्यमंत्री को भी विश्वास था कि केन्द्रीय मंत्री उनके विश्वास को बनाए रखते हुए सौगात देंगे . सपना साकार हुआ और अब जमीन में खड़ा करने की तैयारी है.

कांग्रेस के अंदर पनप रहा विरोध का ज्वालामुखी

कांग्रेस के सृजन मंथन से निकले जिला और शहर अध्यक्ष को लेकर विंध्य में अंदर ही अंदर विरोध शुरू हो गया है. मैदान में काम करने वाले कार्यकर्ताओं को दरकिनार कर आर्थिक रूप से मजबूत को अहमियत दी गई है, उनका पिछला बैकग्राउंड नही देखा गया. तो क्या यह माना जाय कि कांग्रेस में पैसे के आगे आर्थिक कमजोर कार्यकर्ता की दावेदारी हार गई? कई जगह जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओ के बजाय आर्थिक सम्पन्न को अध्यक्ष का ताज पहनाया गया. सिंगरौली शहर अध्यक्ष को लेकर अंदर ही अंदर विरोध चल रहा है. यहां ब्राम्हण, पिछड़ा वर्ग खुद को उपेक्षित महसूस कर रहा है. जबकि यह ब्राम्हण, वैश्य और साहू बहूल्य क्षेत्र है. बावजूद इसके प्रवीण सिंह चौहान के हाथ में शहर की कमान सौप दी गई. अंदर सुलग रहा ज्वालामुखी कब विस्फोट करेगा कुछ कहा नही जा सकता. बहरहाल यह स्थित पूरे विंध्य में है.

पदाधिकारी बनने की चाहत

संगठन में पदाधिकारी बनने और राजनीतिक नियुक्तियां की चाहत में कार्यकर्ता गणेश परिक्रमा लगा रहे है. भाजपा में संगठन के नए फार्मूले के तहत अब संगठन और राजनीतिक नियुक्तियां पर्यवेक्षको के रिपोर्ट पर तय होगी. पर्यवेक्षक विंध्य में रायशुमारी करने के बाद बंद लिफाफा मुख्यालय तक पहुंचा दिये है और अब संगठन में दायित्व पाने के लिये गणेश परिक्रमा शुरू हो गई है. संघ से लेकर संगठन के बड़े नेताओ तक पहुंच का जुगाड़ लगाने का क्रम चल रहा है. हर स्तर पर प्रयास जारी है सत्ता के गलियारे में भी पदाधिकारी बनने की चाहत रखने वालो की भीड़ देखी जा रही है. विधायक-सांसद भी अपने कट्टर समर्थको को दायित्व दिलाने के लिये प्रयास में लगे हुए है. नियुक्ति का पिटारा कब खुलेगा यह तो भविष्य के गर्त में है पर भागीरथ प्रयास में कोई कमी नही होनी चाहिये.

मानसून सत्र की कौन सी उपलब्धि

संसद के मानसून अधिवेशन पर विपक्ष के हंगामे की वजह से पानी फिर गया. कोई नहीं सोचता कि संसद के प्रति मिनट कामकाज पर लाखों रुपए व्यय होते हैं लेकिन कामकाज नहीं होने से धन की बर्बादी होती है. राज्यसभा को वरिष्ठों का सदन कहा जाता है, लेकिन वहां भी संसदीय मर्यादा व शिष्टाचार का उल्लंघन होता है. ऑपरेशन सिंदूर पर 2 दिनों की चर्चा छोड़कर इस सत्र की कोई उपलब्धि नहीं रही. इसके अलावा किसी भी विधेयक पर व्यापक चर्चा नहीं हुई. चर्चा का अवसर विपक्ष ने गंवा दिया. जब गृहमंत्री अमित शाह ने 30 दिनों तक जेल में रहने वाले नेता का पद अपने आप समाप्त हो जाने संबंधी विधेयक रखा तो कांग्रेस, टीएमसी तथा अन्य विपक्षी पार्टियों ने खूब हंगामा किया. सदन में फलक लेकर आने और अध्यक्ष के आसन तक पहुंच जाने की मानो नियमित परंपरा ही बन गई है. यह विधेयक इसलिए है ताकि कोई नेता जेल में रहते हुए सरकार न चलाने पाए. इसमें प्रधानमंत्री पद को भी शामिल किया गया है, लेकिन ऐसे नेता जिन पर भ्रष्टाचार के अलावा अन्य गंभीर आरोप लगे हैं, इस विधेयक से भड़क गए. यह संविधान संशोधन विधेयक व्यापक विचार-विमर्श के लिए संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजा जाएगा. संसद के मानसून सत्र में 120 घंटे कामकाज होने की उम्मीद थी लेकिन सिर्फ 37 घंटे कामकाज हुआ. प्रश्नोत्तर काल में 455 प्रश्नों पर चर्चा होनी थी लेकिन 55 प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए. लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला व राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश ने विपक्षी सदस्यों के आचरण पर तीव्र नाराजी जताई. विपक्ष की मांग थी कि बिहार में जारी मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण पर सदन में चर्चा हो, इसे लेकर कामकाज ठप किया गया. विपक्षी सदस्यों को सोचना चाहिए कि हंगामा करने से क्या हासिल होता है? एक समय ऐसा भी था कि विपक्षी सदस्य संसदपटु रहा करते थे और सार्थक बहस करते थे. अब सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच सौहार्द कम हो गया है. विपक्ष सरकार को शत्रुता की भावना से देखता है.

विपक्ष यह नहीं सोचता कि मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने हैं और एनडीए के बहुमत की सरकार है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

नीतीश कुमार को भगवे से प्यार मुस्लिम टोपी पहनने से इनकार

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मदरसा बोर्ड के कार्यक्रम में मुस्लिम टोपी पहनने से इनकार कर दिया. जब उनके अल्पसंख्यंक विभाग मंत्री जामा खान ने उन्हें टोपी पहनाने का प्रयास किया तो नीतीश ने वह टोपी अपने हाथ में लेकर मंत्री को ही पहना दी. उन्होंने ऐसा क्यों किया?

हमने कहा, नीतीश कुमार नीतिनिपुण हैं और मौके की नजाकत को समझते हैं. उनकी पार्टी जदयू का भगवा पार्टी बीजेपी से गठबंधन है. ऐसे में वह मुस्लिम टोपी कैसे पहनेंगे? कुछ माह बाद बिहार में विधानसभा चुनाव है, इसलिए उन्होंने सावधानी बरती. वह बीजेपी को नाराज करना नहीं चाहते थे.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, देश की राजनीति में टोपियों की अहमियत रही है. पुराने कांग्रेसी नेता सफेद गांधी टोपी पहना करते थे. नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, गोविंदवल्लभ पंत, मोरारजी देसाई, रविशंकर शुक्ल, यशवंतराव चव्हाण, जगजीवन राम, चौधरी चरणसिंह सभी ने गांधी टोपी पहनी. बाद में गांधी टोपी सिर्फ सेवादल के कार्यकर्ताओं तक सीमित रह गई. बीजेपी के अधिकांश नेता आरएसएस के स्वयंसेवक या प्रचारक रहे हैं. जब वह संघ के कार्यक्रम में गणवेश पहनकर जाते हैं तो काली टोपी पहनते हैं. आपने नितिन गडकरी और देवेंद्र फडणवीस के ऐसे फोटो देखे होंगे.

हमने कहा, समाजवादियों की लाल टोपी रहती है जिसे अखिलेश यादव लगाते हैं. टोपी का असर फिल्मों में भी है. निर्देशक वी. शांताराम गांधी टोपी लगाते थे. राजकपूर ने फिल्म श्री 420 में गाया था मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सिर पे लाल टोपी रूसी फिर भी दिल है हिंदुस्तानी ! फिल्म त्रिदेव का गाना था- तिरछी टोपी वाले, बाबू भोले-भाले, तू याद आने लगा है, दिल में समाने लगा है. देव आनंद ने पुरानी फिल्म फंटूश में गाया था- ऐ मेरी टोपी पलट के आ! आपने वह गीत भी सुना होगा सिर पे टोपी लाल हाथ में रेशम का रूमाल, ओ तेरा क्या कहना!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज 50-60 साल पहले पुराने प्राथमिक शिक्षक कोट, धोती पहन कर काली टोपी लगाते थे और हाथ में छड़ी लेकर स्कूल आते थे.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12003

-डॉ. सागर खादीवाला

1		2		3	■	4	5
	■		■	6			
7			■		■	8	
■	■	9	10		■	■	
11	12			■	13	14	
15		■	16	17	■		■
	■	18			19		20
21				■		■	

ऊपर से नीचे
1. संकेत, इशारा 2. शेषनाग 3. छ: मुखवाला, संगीत में स्वर साधना की एक प्रणाली 4. अविरल, ठोस 5. चरमर शब्द होना या करना 10. जीभ, जिव्हा 11. सर्वनाश, बरबादी 12. मार्ग, रास्ता 14. सब, सारा 17. तीन, तीसरा 18. इस का बहुवचन 19. नींद 20. प्रसन्नता

बाएं से दाएं
1. वह सात रंगों का अर्धवृत्त जो वर्षा ऋतु में सूर्य के सामने की दिशा में दिखाई देता है 4. सत्य 6. वह सरकारी दफ्तर जहां से लोग चिट्ठी-पत्री आदि भेजते हैं और जहां से चिट्ठियां वितरित की जाती हैं 7. नौका, नाव 8. गोला, भीगा हुआ, आर्द्र 9. धरने की क्रिया, भाव या ढंग 11. एक ही तरह के रसवाले, एक ही विचार के 13. खींचकर बांधना, जकड़ना 15. उत्सर्ग, कोई बात काम या संबंध छोड़ने की क्रिया 16. नयन 18. इंद्रियों को वश में करना 21. विनय सहित

Solution 12002

अ	फ	गा	नि	स्ता	न	■	म
पा	स	■	शा	व	क	■	द
हि	ला	ना	■	क	वा	य	द
ज	■	मं	द		नी	म	■
■	बा	जू	बं	द	■	की	क
शा	ह	र	ग	■	म	ट	र
स	र	■	■	मा	दा	■	त
क	■	ज	वा	ह	र	ला	ल

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यो में रूचि एवं सफ्लता प्राप्त होगी, व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा, वर्ष के मध्य में सत्ता सुख प्राप्त होगा,स्थाई लाभ का योग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, अत्याधिक परिश्रम के बाद सफ्लता मिलेगी, अधिकारी वर्ग से मतभेद हो सकता है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम से सफ्लता मिलेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारों में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मतभेद हो सकता हे, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शांत, स्वाभिमानी, अपने कार्य के प्रति सजग रहने वाला होगा. लोकप्रिय होगा. बालक जब क्रोधित होग, तब जल्दी शांत नहीं होगा. अपने मनमर्जी का मालिक होगा. अन्याय को कभी सहन नहीं करेगा. विद्या के क्षेत्र में अग्रणी होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

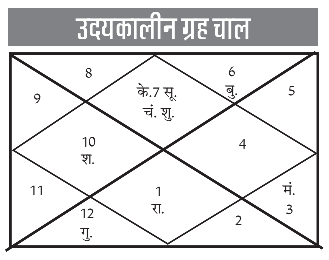

पंचांग

रा.मि. 04 संवत् 2082 भाद्रपद शुक्ल तृतीया भौमवासरे दिन 12/40, हस्त नक्षत्रे दिन-रात, साध्य योगे दिन 1/22, गर करणे सू.उ. 5/40 सू.अ. 6/20, चन्द्रचार कन्या पर्व- हरितालिका तीज व्रत, शु.रा. 6, 8, 9, 12, 1, 4 अ.रा. 7, 10, 11, 2, 3, 5 शुभांक- 8, 0, 5.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल तृतीया को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, शक्कर व मिठाईयों में तेजी का रूख रहेगा. गेहूं, जौ, चना, अनाजों में नरमीं रहेगी. वायदा विचार आज पिछले दिन के बने भाव में ऊँचें उठेंगे, उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 3633 है.

मेष- नौकरी में मनचाहा स्थान मिल सकता है. भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. नया कार्य बनने का योग है. रूका हुआ कार्य बनेगा.

वृषभ- निर्माण के कार्यों में प्रगति होगी. प्रियजनों से मुलाकात होगी. किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता मिलेगी. रोगी की चिन्ता रहेगी. प्रवास का योग है.

मिथुन- जीवनसाथी का सुख सहयोग रहेगा. मित्रों के सहयोग से लाभ में वृद्धि होगी. किसी विशेष व्यक्ति के आगमन से प्रसन्नता रहेगी. सम्मान प्राप्त होगा.

कर्क- धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी. झगडों से परेशान होकर काम छोडने का मन बन सकताहै. मानसिक सुख एवं संतोष रहेगा. पदोन्नति का योग है.

सिंह- आय कम एवं व्यय अधिक होगा. किसी बात को लेकर मन खिन्न हो सकता है. सोचे हुये कार्य बनेंगे. कामकाज में महिला की सलाह उपयोगी रहेगी.

कन्या- मान सम्मान की प्राप्ति होगी. राजनैतिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी. खर्च अधिक होगा. धार्मिक कार्यों की रूपरेखा बनेगी. मानसिक सुख, सौहार्द्र बना रहेगा.

तुला- मानसिक प्रसन्नता में वृद्धि होगी. स्त्री का सुख सहयोग मिलेगा. रोजगार संबंधी शुभ समाचार मिलेगा.कोई वाहन चलाते समय सावधानी रखें.

वृश्चिक- कार्यों में उतार चढ़ाव आ सकता है. लेकिन अंत में स्थिति अनुकूल बन जायेगी. आकस्मिक धन मिलेगा. नवीन योजनाओं का शुभारम्भ होगा.

धनु- मित्रों के सहयो से कार्यों में अच्छी सफ्लता मिलेगी. अनावश्यक कार्यों को टालें. खर्च की अधिकता रहेगी. संतान की चिंता रह सकती है. संयम रखें.

मकर- व्यापार में प्रगति होगी. धार्मिक कार्यो में रूचि बनी रहेगी. धार्मिक यात्रा सम्भव है. समय पर कार्य पूरा होगा. कुछ मन:स्थिति खिन्न रह सकती है.

कुम्भ- टालमटोल के चलते कामकाज में परेशानी हो सकती है. शत्रुओं से सावधान रहें. आर्थिक कार्यों का समाधान होगा. सुखद एवं मनोरंजन कार्यों में व्ययभार बढ़ेगा.

मीन- संतान का सुख, सहयोग रहेगा. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. आत्मविश्वास एवं मनोब बना रहेगा. दूर-दराज की यात्रा होगी. मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

SUDOKU 7135

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7134

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1